६०७ ३४६

म
णि
र
त्न
मा
ला

दाम दो पैसा

प्रश्नोत्तरी

स्वामिश्रीशंकराचार्यरचित



गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० १९८५ से २००९ तक १,७५,०००
सं० २०१० उन्नीसवाँ संस्करण २०,०००
सं० २०११ बीसवाँ संस्करण १५,०००

कुल २,१०,०००
(दो लाख दस हजार)

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

प
८७

श्रीहरिः

वक्तव्य

श्रीस्वामी शङ्कराचार्यजीकी प्रश्नोत्तर-मणि-माला बहुत ही उपादेय पुस्तिका है। इसके प्रत्येक प्रश्न और उत्तरपर मननपूर्वक विचार करना आवश्यक है। संसारमें स्त्री, धन और पुत्रादि पदार्थोंके कारण ही मनुष्य विशेषरूपसे बन्धनमें रहता है, इन पदार्थोंसे वैराग्य होनेमें ही कल्याण है, यही समझकर उन्होंने स्त्री, धन और पुत्रादिकी निन्दा की है। स्त्रीके लिये विशेष जोर देनेका कारण भी स्पष्ट है। धन, पुत्रादि छोड़नेवाले भी प्रायः स्त्रियोंमें आसक्त देखे जाते हैं, वास्तवमें यह दोष स्त्रियोंका नहीं है, यह दोष तो पुरुषोंके बिगड़े हुए मनका है; परन्तु मन

बड़ा चञ्चल है, इसलिये संन्यासियोंको तो स्त्रियोंसे हर तरहसे अलग ही रहना चाहिये । जान पड़ता है कि यह पुस्तिका खासकर संन्यासियोंके लिये ही लिखी गयी थी । इसमें बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो सभीके कामकी हैं । अतः उनसे हमलोगोंको पूरा लाभ उठाना चाहिये । स्त्री, पुत्र, धन आदि संसारके सभी पदार्थोंसे यथा-साध्य ममताका त्याग करना आवश्यक है ।



ॐ

श्रीपरमात्मने नमः

❀प्रश्नोत्तरी❀

अपारसंसारसमुद्रमध्ये
सम्मज्जतो मे शरणं किमस्ति ।
गुरो कृपालो कृपया वदैत-
द्विश्वेशपादाम्बुजदीर्घनौका ।१।

प्रश्न	उत्तर
हे दयामय गुरुदेव ! कृपा करके यह बताइये कि अपार संसाररूपी समुद्रमें मुझ डूबते हुएका आश्रय क्या है ?	विश्वपति परमात्माके चरणकमलरूपी जहाज ।

बद्धो हि को यो विषयानुरागी
का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः ।

को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः
तृष्णाक्षयः स्वर्गपदं किमस्ति ।२।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें बँधा कौन है ?	विषयोंमें आसक्त ।
विमुक्ति क्या है ?	विषयोंसे वैराग्य ।
घोर नरक क्या है ?	अपना शरीर ।
स्वर्गका पद क्या है ?	तृष्णाका नाश होना ।

संसारहृत्कः श्रुतिजात्मबोधः
को मोक्षहेतुः कथितः स एव ।
द्वारं किमेकं नरकस्य नारी
का स्वर्गदा प्राणभृतामहिंसा ।३।

प्रश्न	उत्तर
संसारको हरनेवाला कौन है ?	वेदसे उत्पन्न आत्मज्ञान।

मोक्षका कारण क्या कहा गया है ?	वही आत्मज्ञान ।
नरकका प्रधान द्वार क्या है ?	नारी ।
स्वर्गको देनेवाली क्या है ?	जीवमात्रकी अहिंसा ।

शेते सुखं कस्तु समाधिनिष्ठो
जागर्ति को वा सदसद्विवेकी ।
के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि
तान्येव मित्राणि जितानि यानि ।४।

प्रश्न	उत्तर
(वास्तवमें) सुखसे कौन सोता है ?	जो परमात्माके स्वरूपमें स्थित है ।
और कौन जागता है ?	सत् और असत्के तत्वका जाननेवाला ।
शत्रु कौन हैं ?	अपनी इन्द्रियाँ; परन्तु जो जीती हुई हों तो वही मित्र हैं ।

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः
श्रीमांश्च को यस्य समस्ततोषः ।
जीवन्मृतः कस्तु निरुद्यमो यः
किं वामृतं स्यात्सुखदा निराशा ।५।

प्रश्न	उत्तर
दरिद्र कौन है ?	भारी तृष्णावाला ।
और धनवान् कौन है ?	जिसे सब तरहसे सन्तोष है
(वास्तवमें) जीते-जी मरा कौन है ?	जो पुरुषार्थहीन है ।
और अमृत क्या हो सकता है ?	सुख देनेवाली निराशा । (आशासे रहित होना)

पाशो हि को यो ममताभिमानः
सम्मोहयत्येव सुरेव का स्त्री ।
को वा महान्धो मदनातुरो यो
मृत्युश्च को वापयशः स्वकीयम् ।६।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें फाँसी क्या है ?	जो 'मैं' और 'मेरा' पन है।
मदिराकी तरह क्या चीज निश्चय ही मोहित कर देती है ?	नारी ही।
और बड़ा भारी अन्धा कौन है ?	जो कामवश व्याकुल है।
मृत्यु क्या है ?	अपनी अपकीर्ति।

को वा गुरुर्यो हि हितोपदेष्टा
शिष्यस्तु को यो गुरुभक्त एव।
को दीर्घरोगो भव एव साधो
किमौषधं तस्य विचार एव ।७।

प्रश्न	उत्तर
गुरु कौन है ?	जो केवल हितका ही उपदेश करनेवाला है।
शिष्य कौन है ?	जो गुरुका भक्त है, वही।

बड़ा भारी रोग क्या है ?	हे साधो ! बार-बार जन्म लेना ही ।
उसकी दवा क्या है ?	परमात्माके स्वरूपका मनन ही ।

किं भूषणाद्भूषणमस्ति शीलं
तीर्थं परं किं स्वमनो विशुद्धम् ।
किमत्र हेयं कनकं च कान्ता
श्राव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यम् ।८।

प्रश्न	उत्तर
भूषणोंमें उत्तम भूषण क्या है ?	उत्तम चरित्र ।
सबसे उत्तम तीर्थ क्या है?	अपना मन जो विशेषरूपसे शुद्ध किया हुआ हो।
इस संसारमें त्यागने योग्य क्या है ?	काञ्चन और कामिनी ।
सदा (मन लगाकर) सुनने योग्य क्या है ?	वेद और गुरुका वचन ।

के हेतवो ब्रह्मगतेस्तु सन्ति
सत्सङ्गतिर्दानविचारतोषाः ।
के सन्ति सन्तोऽखिलवीतरागा
अपास्तमोहाः शिवतत्त्वनिष्ठाः ।६।

प्रश्न	उत्तर
परमात्माकी प्राप्तिके क्या-क्या साधन हैं ?	सत्सङ्ग, सात्त्विक दान, परमेश्वरके स्वरूपका मनन और सन्तोष ।
महात्मा कौन हैं ?	संपूर्ण संसारसे जिनकी आसक्ति नष्ट हो गयी है, जिनका अज्ञान नाश हो चुका है और जो कल्याणरूप परमात्म-तत्त्वमें स्थित हैं ।

को वा ज्वरः प्राणभृतां हि चिन्ता
मूर्खोऽस्ति को यस्तु विवेकहीनः ।

कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः
किं जीवनं दोषविवर्जितं यत् ।१०।

प्रश्न	उत्तर
प्राणियोंके लिये वास्तवमें ज्वर क्या है ?	चिन्ता ।
मूर्ख कौन है ?	जो विचारहीन है ।
करने योग्य प्यारी क्रिया क्या है ?	शिव और विष्णुकी भक्ति।
वास्तवमें जीवनकौन-सा है?	जो सर्वथा निर्दोष है ।

विद्या हि का ब्रह्मगतिप्रदा या
बोधो हि को यस्तु विमुक्तिहेतुः ।
को लाभ आत्मावगमो हि यो वै
जितं जगत्केन मनो हि येन ।११।

प्रश्न	उत्तर
वास्तवमें विद्या कौन-सी है ?	जो परमात्माको प्राप्त करा देनेवाली है ।

वास्तविक ज्ञान क्या है ?	जो (यथार्थ) मुक्तिका कारण है ।
यथार्थ लाभ क्या है ?	जो परमात्माकी प्राप्ति है, वही ।
जगत्को किसने जीता ?	जिसने मनको जीता ।

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा
मनोजबाणैर्व्यथितो न यस्तु ।
प्राज्ञोऽथ धीरश्च समस्तु को वा
प्राप्तो न मोहं ललनाकटाक्षैः ।१२।

प्रश्न	उत्तर
वीरोंमें सबसे बड़ा वीर कौन है ?	जो कामबाणोंसे पीड़ित नहीं होता ।
बुद्धिमान्, समदर्शी और धीर पुरुष कौन है ?	जो स्त्रियोंके कटाक्षोंसे मोहको प्राप्त न हो !

विषाद्विषं किं विषयाः समस्ता
दुःखी सदा को विषयानुरागी ।

धन्योऽस्ति को यस्तु परोपकारी
कः पूजनीयः शिवतत्त्वनिष्ठः ।१३।

प्रश्न	उत्तर
विषसे भी भारी विष कौन है ?	सारे विषयभोग ।
सदा दुःखी कौन है ?	जो संसारके भोगोंमें आसक्त है ।
और धन्य कौन है ?	जो परोपकारी है ।
पूजनीय कौन है ?	कल्याणरूप परमात्मतत्त्वमें स्थित महात्मा ।

सर्वास्ववस्थास्वपि किन्न कार्यं
किं वा विधेयं विदुषा प्रयत्नात् ।
स्नेहं च पापं पठनं च धर्मं
संसारमूलं हि किमस्ति चिन्ता ।१४।

प्रश्न	उत्तर
सभी अवस्थाओंमें विद्वानोंको बड़े जतनसे क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	संसारसे स्नेह और पाप नहीं करना तथा सद्-ग्रन्थोंका पठन और धर्मका पालन करना चाहिये।
संसारकी जड़ क्या है ?	(उसका) चिन्तन ही।

विज्ञान्महाविज्ञतमोऽस्ति को वा
नार्या पिशाच्या न च वञ्चितो यः।
का शृङ्खला प्राणभृतां हि नारी
दिव्यं व्रतं किं च समस्तदैन्यम् ।१५।

प्रश्न	उत्तर
समझदारोंमें सबसे अच्छा समझदार कौन है ?	जो स्त्रीरूप पिशाचिनी-से नहीं ठगा गया है।
प्राणियोंके लिये साँकल क्या है ?	नारी ही।
श्रेष्ठ व्रत क्या है ?	पूर्णरूपसे विनयभाव।

ज्ञातुं न शक्यं च किमस्ति सर्वै-
र्योषिन्मनो यच्चरितं तदीयम्।
का दुस्त्यजा सर्वजनैर्दुराशा
विद्याविहीनः पशुरस्ति को वा ।१६।

प्रश्न	उत्तर
सब किसीके लिये क्या जानना सम्भव नहीं है?	स्त्रीका मन और उसका चरित्र ।
सब लोगोंके लिये क्या त्यागना अत्यन्त कठिन है?	बुरी वासना (विषयभोग और पापकी इच्छाएँ) ।
पशु कौन है?	जो सद्विद्यासे रहित (मूर्ख) है ।

वासो न सङ्गः सह कैर्विधेयो
मूर्खैश्च[1] नीचैश्च खलैश्च[2] पापैः।

1- विवेक शून्य
2- अधर ...

मुमुक्षुणा किं त्वरितं विधेयं

सत्सङ्गतिर्निर्ममतेशभक्तिः ।१७।

प्रश्न	उत्तर
किन-किनके साथ निवास और संग नहीं करना चाहिये?	मूर्ख, नीच, दुष्ट और पापियोंके साथ।
मुक्ति चाहनेवालोंको तुरंत क्या करना चाहिये?	सत्संग, ममताका त्याग और परमेश्वरकी भक्ति।

लघुत्वमूलं च किमर्थितैव

गुरुत्वमूलं यदयाचनं च।

जातो हि को यस्य पुनर्न जन्म

को वा मृतो यस्य पुनर्न मृत्युः।१८।

प्रश्न	उत्तर
छोटेपनकी जड़ क्या है?	याचना ही।
बड़प्पनकी जड़ क्या है?	कुछ भी न माँगना।

किसका जन्म सराहनीय है ?	जिसका फिर जन्म न हो।
किसकी मृत्यु सराहनीय है ?	जिसकी फिर मृत्यु नहीं होती।

मूकोऽस्ति को वा बधिरश्च को वा
वक्तुं न युक्तं समये समर्थः।
तथ्यं सुपथ्यं न शृणोति वाक्यं
विश्वासपात्रं न किमस्ति नारी ।१६।

प्रश्न	उत्तर
गूँगा कौन है ?	जो समयपर उचित वचन कहनेमें समर्थ नहीं है।
और बहिरा कौन है ?	जो यथार्थ और हितकर वचन नहीं सुनता।
विश्वासके योग्य कौन नहीं है ?	नारी।

तत्त्वं किमेकं शिवमद्वितीयं
किमुत्तमं सच्चरितं यदस्ति ।
त्याज्यं सुखं किं स्त्रियमेव सम्य-
ग्देयं परं किं त्वभयं सदैव ।२०।

प्रश्न	उत्तर
एक तत्त्व क्या है ?	अद्वितीय कल्याण-तत्त्व (परमात्मा) ।
सबसे उत्तम क्या है ?	जो उत्तम आचरण है ।
कौन-सा सुख तज देना चाहिये ?	सब प्रकारसे स्त्रीका सुख ही ।
देने योग्य उत्तम दान क्या है ?	सदा अभय ही ।

शत्रोर्महाशत्रुतमोऽस्ति को वा
कामः सकोपानृतलोभतृष्णः । मिथ्या
न पूर्यते को विषयैः स एव
किं दुःखमूलं ममताभिधानम् ।२१।

प्रश्न	उत्तर
शत्रुओंमें सबसे बड़ा भारी शत्रु कौन है ?	क्रोध, झूठ, लोभ और तृष्णासहित काम ।
विषयभोगोंसे कौन तृप्त नहीं होता ?	वही काम ।
दुःखकी जड़ क्या है ?	ममता नामक दोष ।

किं मण्डनं साक्षरता मुखस्य
सत्यं च किं भूतहितं सदैव ।
किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं
कामारिकंसारिसमर्चनाख्यम् ।२२।

प्रश्न	उत्तर
मुखका भूषण क्या है ?	विद्वत्ता ।
सच्चा कर्म क्या है ?	सदा ही प्राणियोंका हित करना ।
कौन-सा कर्म करके पछताना नहीं पड़ता ?	भगवान् शिव और श्री-कृष्णका पूजनरूप कर्म ।

कस्यास्ति नाशे मनसो हि मोक्षः
क्व सर्वथा नास्ति भयं विमुक्तौ ।
शल्यं परं किं निजमूर्खतैव
के के ह्युपास्या गुरुदेववृद्धाः ।२३।

प्रश्न	उत्तर
किसके नाशमें मोक्ष है ?	मनके ही ।
किसमें सर्वथा भय नहीं है ?	मोक्षमें ।
सबसे अधिक चुभनेवाली कौन चीज है ?	अपनी मूर्खता ही ।
उपासनाके योग्य कौन-कौन हैं ?	देवता, गुरु और वृद्ध ।

उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते
किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात् ।
वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं
मुरारिपादाम्बुजचिन्तनं च ।२४।

प्रश्न	उत्तर
प्राण हरनेवाले कालके उपस्थित होनेपर अच्छी बुद्धिवालोंको बड़े जतनसे तुरंत क्या करना उचित है ?	सुख देनेवाले और मृत्युका नाश करनेवाले भगवान् मुरारिके चरण-कमलोंका तन, मन, वचनसे चिन्तन करना ।

के दस्यवः सन्ति कुवासनाख्याः
कः शोभते यः सदसि प्रविद्यः ।
मातेव का या सुखदा सुविद्या
किमेधते दानवशात्सुविद्या ।२५।

प्रश्न	उत्तर
डाकू कौन हैं ?	बुरी वासनाएँ ।
सभामें शोभा कौन पाता है	जो अच्छा विद्वान् है ।
माताके समान सुख देनेवाली कौन है ?	उत्तम विद्या ।
देनेसे क्या बढ़ती है ?	अच्छी विद्या ।

कुतो हि भीतिः सततं विधेया
लोकापवादाद्भवकाननाच्च ।
को वातिबन्धुः पितरश्च के वा
विपत्सहायः परिपालका ये ।२६।

प्रश्न	उत्तर
निरन्तर किससे डरना चाहिये ?	लोक-निन्दासे और संसाररूपी वनसे ।
अत्यन्त प्यारा बन्धु कौन है ?	जो विपत्तिमें सहायता करे ।
और पिता कौन हैं ?	जो सब प्रकारसे पालन-पोषण करें ।

बुद्ध्वा न बोध्यं परिशिष्यते किं
शिवप्रसादं सुखबोधरूपम् ।
ज्ञाते तु कस्मिन्विदितं जगत्स्या-
त्सर्वात्मके ब्रह्मणि पूर्णरूपे ।२७।

प्रश्न	उत्तर
क्या समझनेके बाद कुछ भी समझना बाकी नहीं रहता ?	शुद्ध, विज्ञान, आनन्दघन कल्याणरूप परमात्माको।
किसको जान लेनेपर (वास्तवमें) जगत् जाना जाता है ?	सर्वात्मरूप परिपूर्ण ब्रह्मके स्वरूपको।

किं दुर्लभं सद्गुरुरस्ति लोके
सत्सङ्गतिर्ब्रह्मविचारणा च ।
त्यागो हि सर्वस्य शिवात्मबोधः
को दुर्जयः सर्वजनैर्मनोजः ।२८।

प्रश्न	उत्तर
संसारमें दुर्लभ क्या है ?	सद्गुरु, सत्सङ्ग, ब्रह्मविचार, सर्वस्वका त्याग और कल्याणरूप परमात्माका ज्ञान ।

सबके लिये क्या जीतना कठिन है ?	कामदेव ।

पशोः पशुः को न करोति धर्मं
प्राधीतशास्त्रोऽपि न चात्मबोधः ।
किन्तद्विषं भाति सुधोपमं स्त्री
के शत्रवो मित्रवदात्मजाद्याः ।२६।

प्रश्न	उत्तर
पशुओंसे भी बढ़कर पशु कौन है ?	शास्त्रका खूब अध्ययन करके जो धर्मका पालन नहीं करता और जिसे आत्मज्ञान नहीं हुआ ।
वह कौन-सा विष है जो अमृत-सा जान पड़ता है?	नारी ।
शत्रु कौन है जो मित्र-सा लगता है ?	पुत्र आदि ।

विद्युच्चलं किं धनयौवनायु-
र्दानं परं किञ्च सुपात्रदत्तम्।
कण्ठङ्गतैरप्यसुभिर्न कार्यं
किं किं विधेयं मलिनं शिवार्चा।३०।

प्रश्न	उत्तर
बिजलीकी तरह क्षणिक क्या है ?	धन, यौवन और आयु।
सबसे उत्तम दान कौन-सा है ?	जो सुपात्रको दिया जाय।
कण्ठगत प्राण होनेपर भी क्या नहीं करना चाहिये और क्या करना चाहिये ?	पाप नहीं करना चाहिये और कल्याणरूप परमात्माकी पूजा करनी चाहिये।

अहर्निशं किं परिचिन्तनीयं
संसारमिथ्यात्वशिवात्मतत्त्वम् ।
किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारेः
क्वास्था न कार्या सततं भवाब्धौ।२१।

प्रश्न	उत्तर
रात-दिन विशेषरूपसे क्या चिन्तन करना चाहिये ?	संसारका मिथ्यापन और कल्याणरूप परमात्माका तत्त्व ।
वास्तवमें कर्म क्या है ?	जो भगवान् श्रीकृष्णको प्रिय हो ।
सदैव किसमें विश्वास नहीं करना चाहिये ?	संसार-समुद्रमें ।

कण्ठङ्गता वा श्रवणङ्गता वा
प्रश्नोत्तराख्या मणिरत्नमाला ।

तनोतु मोदं विदुषां सुरम्यं
रमेशगौरीशकथेव सद्यः ।३२।

यह प्रश्नोत्तर नामकी मणिरत्नमाला कण्ठमें या कानोंमें जाते ही लक्ष्मीपति भगवान् विष्णु और उमापति भगवान् शङ्करकी कथाकी तरह विद्वानोंके सुन्दर आनन्दको बढ़ावे ।



संस्कृतकी कुछ मूल तथा सानुवाद पुस्तकें

श्रीमद्भगवद्गीता-तत्त्वविवेचनी–पृष्ठ ६८४, चित्र ४, सजिल्द, मूल्य ... ४)

श्रीमद्भगवद्गीता शाङ्करभाष्य–हिंदी-अनुवाद-सहित, पृष्ठ ५२०, चित्र ३, मूल्य २॥।)

श्रीमद्भगवद्गीता रामानुजभाष्य–हिंदी-अनुवाद-सहित, पृष्ठ ६०८, चित्र ३, स०, मू० २॥)

श्रीमद्भगवद्गीता [बड़ी]–पृष्ठ ५७०, चित्र ४, सजिल्द, मूल्य ... १।)

ईशादि नौ उपनिषद्–अन्वय-हिंदी-व्याख्या-सहित, पृष्ठ ४४८, सजिल्द, मूल्य २)

ईशावास्योपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित सचित्र, पृष्ठ ५२, मूल्य ... ≡)

केनोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ १४२, मूल्य ... ॥)

कठोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ १७८, मूल्य ... ॥–)

प्रश्नोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ १२८, मूल्य ... ।≡)

मुण्डकोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ १२२, मूल्य ... ।≶)

माण्डूक्योपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ २८४, मूल्य ... १)

ऐतरेयोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, पृष्ठ १०४, मूल्य ... ।=)

तैत्तिरीयोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्यसहित, सचित्र, पृष्ठ २५२, मूल्य ... ।।।–)

श्वेताश्वतरोपनिषद्–सानुवाद, शांकरभाष्य-सहित, सचित्र, पृष्ठ २६८, मूल्य ।।।=)

ईशावास्योपनिषद्–अन्वय तथा सरल हिंदी-व्याख्यासहित, पृष्ठ १६, मूल्य –)

वेदान्तदर्शन–हिंदी-व्याख्यासहित, पृष्ठ ४१६, सचित्र, सजिल्द, मूल्य ... २)

पातञ्जलयोगदर्शन–सटीक, पृष्ठ १९२, चित्र २, मूल्य ।।।) सजिल्द ... १)

पातञ्जलयोगदर्शन–मूल, पृष्ठ २०, मूल्य ...)।

श्रीमद्भागवतमहापुराण–दो खण्डोंमें, सटीक, पृष्ठ २०३२, चित्र रंगीन २६, स० मू० १५)

श्रीमद्भागवतमहापुराण–मूल, मोटा टाइप, पृष्ठ ६९२, चित्र १, सजिल्द, मूल्य ६)

श्रीमद्भागवतमहापुराण—मूल, गुटका, सजिल्द, पृष्ठ ७६८, सचित्र, मूल्य ... ३)

श्रीभागवतामृत—सटीक, पृष्ठ ३०४, चित्र ८, सजिल्द, मूल्य ... १।।।)

श्रीविष्णुपुराण—सानुवाद, पृष्ठ ६२४, चित्र ८, सजिल्द, मूल्य ... ४)

अध्यात्मरामायण—सानुवाद, पृष्ठ ४००, सचित्र, कपड़ेकी जिल्द, मूल्य ... ३)

श्रीदुर्गासप्तशती—सानुवाद पृष्ठ २४०, सचित्र, मूल्य ।।।), सजिल्द ... १)

श्रीदुर्गासप्तशती—मूल, पृष्ठ १५२, सचित्र, मूल्य ।।) सजिल्द ... ।।।)

विष्णुसहस्रनाम शाङ्करभाष्य—पृष्ठ २८०, सचित्र, मूल्य ... ।।।=)

श्रीविष्णुसहस्रनाम—सटीक, मूल्य ... –)।।

श्रीविष्णुसहस्रनाम—मूल, पृष्ठ ४८, मूल्य ...)।।।

लघुसिद्धान्तकौमुदी—(संस्कृतके विद्यार्थियोंके लिये) पृष्ठ ३६८, मूल्य ... ।।।)

सूक्ति-सुधाकर—सुन्दर श्लोक-संग्रह, सानुवाद, पृष्ठ २६६, मूल्य ।।=), सजिल्द १)

विदुरनीति—सानुवाद, पृष्ठ १६८, मूल्य ... ।।–)

स्तोत्ररत्नावली—चुने हुए स्तोत्र, सानुवाद, सचित्र, पृष्ठ ३२०, मूल्य ॥), स० ॥।=)
प्रेम-दर्शन—नारद-भक्ति-सूत्रोंकी विस्तृत टीका, सचित्र, पृष्ठ १९२, मूल्य ··· ।-)
विवेक-चूडामणि—सानुवाद, सचित्र, पृष्ठ १८४, मूल्य ··· ··· ।-)
अपरोक्षानुभूति—शङ्करस्वामिकृत, सानुवाद, पृष्ठ ४०, सचित्र, मूल्य ··· =)॥
मनुस्मृति—द्वितीय अध्याय, सार्थ, मूल्य ··· -)॥
शाण्डिल्यभक्तिसूत्र—सटीक, पृष्ठ ६४, मूल्य -)॥
मूलरामायण—सानुवाद, पृष्ठ २४, मूल्य ··· -)।
गोविन्द-दामोदर-स्तोत्र—सटीक, मूल्य ··· -)
संध्योपासनविधि—अर्थसहित, पृष्ठ २४, मूल्य -)
संध्या—विधिसहित, पृष्ठ १६, मूल्य ···)॥
शारीरकमीमांसादर्शन—मूल, मूल्य ···)॥।
श्रीरामगीता—सटीक, पृष्ठ ४० मूल्य ···)॥।
नारद-भक्ति-सूत्र—सटीक, पृष्ठ २४, मूल्य ···)।
सप्तश्लोकी गीता—सटीक, मूल्य आधा पैसा

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

श्रीहरिः



सप्तश्लोकी गीता

गीताप्रेस, गोरखपुर

मुद्रक तथा प्रकाशक—घनश्यामदास जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

सं० १९९२ से २०१० तक १,७०,०००
सं० २०११ सत्रहवाँ संस्करण १५,०००
सं० २०१२ अठारहवाँ संस्करण २०,०००
कुल २,०५,०००

मूल्य आधा पैसा

पता—गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

सप्तश्लोकी गीता

भाषा-टीका

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१॥

जो पुरुष ॐ ऐसे (इस) एक अक्षररूप ब्रह्मको उच्चारण करता हुआ (और उसके अर्थ-स्वरूप) मेरेको चिन्तन करता हुआ शरीरको त्याग कर जाता है वह पुरुष परमगतिको प्राप्त होता है ।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥२॥

हे अन्तर्यामिन् ! यह योग्य ही है (कि) जो आपके नाम और प्रभावके कीर्तनसे जगत् अति हर्षित होता है और अनुरागको भी प्राप्त होता है

(तथा) भयभीत हुए राक्षसलोग दिशाओंमें भागते हैं और सब सिद्धगणोंके समुदाय नमस्कार करते हैं।

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥३॥

वह सब ओरसे हाथ-पैरवाला (एवं) सब ओरसे नेत्र, सिर और मुखवाला (तथा) सब ओरसे श्रोत्रवाला है; क्योंकि (वह) संसारमें सबको व्याप्त करके स्थित है* ।

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥४॥

---

* आकाश जिस प्रकार वायु, अग्नि, जल और पृथ्वीका कारणरूप होनेसे उनको व्याप्त करके स्थित है, वैसे ही परमात्मा भी सबका कारणरूप होनेसे सम्पूर्ण चराचर जगतको व्याप्त करके स्थित है।

जो पुरुष सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता,* सूक्ष्मसे भी अति सूक्ष्म, सबके धारण-पोषण करनेवाले, अचिन्त्यस्वरूप, सूर्यके सदृश नित्य चेतन प्रकाशरूप, अविद्यासे अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमात्माको स्मरण करता है ।

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥५॥

आदिपुरुष परमेश्वररूप मूलवाले † (और) ब्रह्मारूप मुख्य शाखावाले‡ (जिस) संसाररूप

---

* अन्तर्यामीरूपसे सब प्राणियोंके शुभ और अशुभ कर्मके अनुसार शासन करनेवाला ।

† आदिपुरुष नारायण वासुदेव भगवान् ही नित्य और अनन्त तथा सबके आधार होनेके कारण और सबके ऊपर नित्यधाममें सगुणरूपसे वास करनेके कारण ऊर्ध्वनामसे कहे गये हैं और वे मायापति, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर ही इस संसाररूप वृक्षके कारण हैं, इसलिये इस संसारवृक्षको 'ऊर्ध्वमूलवाला' कहते हैं ।

‡ उस आदिपुरुष परमेश्वरसे उत्पत्तिवाला होनेके

पीपलके वृक्षको अविनाशी* कहते हैं (तथा) जिसके वेद † पत्ते (कहे गये हैं) उस संसाररूप वृक्षको जो पुरुष (मूलसहित) तत्त्वसे जानता है वह वेदके तात्पर्यको जाननेवाला है ‡

कारण तथा नित्यधामसे नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण, हिरण्यगर्भरूप ब्रह्माको परमेश्वरकी अपेक्षा अधः कहा है और वही इस संसारका विस्तार करनेवाला होनेसे इसकी मुख्य शाखा है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अधःशाखावाला' कहते हैं।

* इस वृक्षका मूल कारण परमात्मा अविनाशी है तथा अनादिकालसे इसकी परम्परा चली आती है, इसलिये इस संसारवृक्षको 'अविनाशी' कहते हैं।

† इस वृक्षकी शाखारूप ब्रह्मासे प्रकट होनेवाले और यज्ञादिक कर्मोंके द्वारा इस संसारवृक्षकी रक्षा और वृद्धिके करनेवाले एवं शोभाको बढ़ानेवाले होनेसे वेद पत्ते कहे गये हैं।

‡ भगवान्‌की योगमायासे उत्पन्न हुआ संसार क्षणभङ्गुर, नाशवान् और दुःखरूप है, इसके चिन्तनको त्याग, केवल परमेश्वरका ही नित्य-निरन्तर अनन्य प्रेमसे चिन्तन करना वेदके तात्पर्यको जानना है।

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥

मैं (ही) सब प्राणियोंके हृदयमें अन्तर्यामी-रूपसे स्थित हूँ (तथा) मेरेसे ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन* होता है और सब वेदोंद्वारा मैं ही जाननेके योग्य† हूँ (तथा) वेदान्तका कर्ता और वेदोंको जाननेवाला (भी) मैं ही (हूँ) ।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥७॥

केवल मुझ सच्चिदानन्दघन वासुदेव परमात्मामें ही अनन्यप्रेमसे नित्य-निरन्तर अचल मनवाला

* विचारके द्वारा बुद्धिमें रहनेवाले संशय, विपर्यय आदि दोषोंको हटानेका नाम अपोहन है ।

† सर्व वेदोंका तात्पर्य परमेश्वरको जनानेका है इसलिये सब वेदोंद्वारा जाननेके योग्य एक परमेश्वर ही है ।

हो (और) मुझ परमेश्वरको ही श्रद्धा-प्रेमसहित निष्कामभावसे नाम, गुण और प्रभावके श्रवण, कीर्तन, मनन और पठनपाठनद्वारा निरन्तर भजनेवाला हो (तथा) मेरा मन, वाणी और शरीरके द्वारा सर्वस्व अर्पण करके अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमसे विह्वलता-पूर्वक पूजन करनेवाला हो (और) मुझ सर्वशक्तिमान् विभूति बल ऐश्वर्य माधुर्य गम्भीरता उदारता वात्सल्य और सुहृदता आदि गुणोंसे सम्पन्न सबके आश्रयरूप वासुदेवको विनयभावपूर्वक भक्तिसहित साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम कर, इस प्रकार मेरे शरण हुआ (तू) आत्माको मेरेमें एकीभाव करके मेरेको ही प्राप्त होवेगा ।

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
सप्तश्लोकी गीता सम्पूर्णा